यीशु ने यूहन्ना को दिखाया कि क्या होने वाला है

बच्चों के शिक्षकगणों को इस अध्ययनमाला से **R4b** पढ़ना चाहिये

1. **प्रकाशित वाक्य नामक पुस्तक पढ़ाने से पूर्व स्वयं को परमेश्वर के वचन से तथा प्रार्थना द्वारा भली भांति तैयार करें।**

प्रार्थना : ''हे प्रभु यीशु, आप समस्त पृथ्वी के स्वामी हैं। अपने विश्वासियों की और मेरी सहायता कीजिए कि हम हर कीमत पर आपकी सेवा कर सकें, और धन्य आशा लेकर आपके दुबारा आने की बाट जोहते रहें।'' आमीन।

नोट :प्रकाशित वाक्य की पुस्तक में अनेक प्रतीष्ठात्मक बातें पाई जाती हैं। अधिकांश प्रतीक पुराने नियम के हैं। नया नियम बताता है कि किस प्रकार यीशु ने प्राचीन भविष्यवाणियों की पूर्ती की। प्रकाशित वाक्य की पुस्तक सतावों का सामना करने वाले मसीहियों को प्रोत्साहित करती है कि वे ख्रीस्त के आने तक विश्वासी जन बने रहें।

निम्नलिखित कार्यक्रम के अनुसार पूरे सप्ताह यह पुस्तक पढ़ें और ज्ञात करें कि यह पुस्तक हमें किस प्रकार सहायता पहुंचाती है कि हम पृथ्वी पर रहते हुए स्वर्ग को देख सकें।

पहला दिन

इन सन्देशों में ख्रीस्त को स्वर्ग में देखें :

1:1-9 यीशु ने पृथ्वी पर हमारे लिए क्या किया?

1:19-19 यीशु स्वर्ग में हमारे लिए क्या करता है?

2:1-3:22 पृथ्वी के विश्वासियों से यीशु क्या कहते हैं? (7 कलीसियाएं)

4:1-5:14 विश्वासी, यीशु ख्रीस्त से स्वर्ग में क्या कहते हैं?

दूसरा दिन

इन सन्देशों में देखें, ख्रीस्त के लिए जीना!

6:1-17 जो स्वर्ग में निर्धारित है, वह पृथ्वी पर होगा (7 मुहरें)।

7:1-8 पृथ्वी पर विश्वासी ख्रीस्त के लिए क्या करता है (12 गोत्र)।

7:9-8:6 ख्रीस्त विश्वासी के लिए स्वर्ग में क्या करता है।

तीसरा दिन

इन सन्देशों में परमेश्वर के न्याय के संबंध में देखें :

8:7-9:21 भयानक घटनाएं पृथ्वी पर होंगी (7 तुरही)।

10:1-11:2 अद्‌भुत बातें जो स्वर्ग में होंगी।

11:3-14 दुष्ट लोग विश्वासयोग्य लोगों से पृथ्वी पर क्या करेंगे (2 गवाह)।

11:15-19 दुष्ट लोगों से स्वर्ग क्या करेगा।

चौथा दिन

इन संदेशों में आत्मिक मतभेद देखें :

12:1-12 अच्छाई व बुराई के बीच स्वर्ग में युद्ध।

12:13-17 अच्छाई व बुराई का युद्ध, पृथ्वी पर।

13:1-10 विश्वासियों के विरुद्ध राजनैतिक शक्तियां, पृथ्वी पर (2 पशु)।

13:11-18 दुष्टात्मा की शक्तियां विश्वासियों के विरुद्ध, पृथ्वी पर।

पांचवां दिन

इन सन्देशों में देखें मसीही होने के नाते दु:ख उठाना :

14:1-5 स्वर्ग में प्रवेश करने वाले वे मसीही जिन्होंने दु:ख उठाया था।

14:6-12 स्वर्ग से पृथ्वी पर आने वाला सामर्थी स्वर्गदूत।

14:13-18 परमेश्वर ने स्वर्ग में क्या निर्णय लिया।

14:19-20 परमेश्वर पृथ्वी क्या करने जा रहा है (7 स्वर्गदूत)

पांचवां दिन (जारी)

इन सन्देशों में देखें मसीह का आना :

15:1-8 स्वर्ग में परमेश्वर कैसे न्याय का निर्णय लेगा।

16:1-21 परमेश्वर कैसे पृथ्वी पर न्याय करेगा।

17:1 - 18:3 किस प्रकार शक्तिशाली राष्ट्रों का पतन होगा (सात राजा)।

18:4-8 परमेश्वर किस प्रकार स्वर्ग से दुष्टों को अपराधी ठहराएगा।

18:9-24 किस प्रकार परमेश्वर की इच्छा से अंतिम विपत्ति पृथ्वी पर पड़ेगी।

19:1-10 किस प्रकार परमेश्वर की इच्छा द्वारा स्वर्ग से अंतिम विजय होगी।

छठा दिन

इन सन्देशों में देखें मसीह का अनंत राज्य :

19:11-18 किस प्रकार स्वर्ग में ख्रीस्त राजा के रूप में राज्य करेगा।

19:19-21 ख्रीस्त किस प्रकार पृथ्वी पर विजेता कहलाएगा।

20:1-3 किस प्रकार स्वर्ग की शक्तियां शैतान को बन्दी बनाएंगी।

20:4-10 ख्रीस्ट की सामर्थ किस प्रकार पृथ्वी पर राज्य करेगी (प्रथम पुनरुत्थान)।

20:11-17 किस प्रकार स्वर्ग से परमेश्वर दुष्टों का न्याय करेगा (दूसरी मृत्यु)।

21:1-8 किस प्रकार पृथ्वी पर परमेश्वर धार्मियों को प्रतिफल देगा।

सातवां दिन

इन सन्देशों में देखें वर्तमान मानव के लिए शिक्षा :

21:9-27 विश्वासियों के लिए स्वर्ग की प्रतिज्ञा।

22:1-5 पृथ्वी के दुष्टों के लिए चेतावनी।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की मुख्य घटनाएं

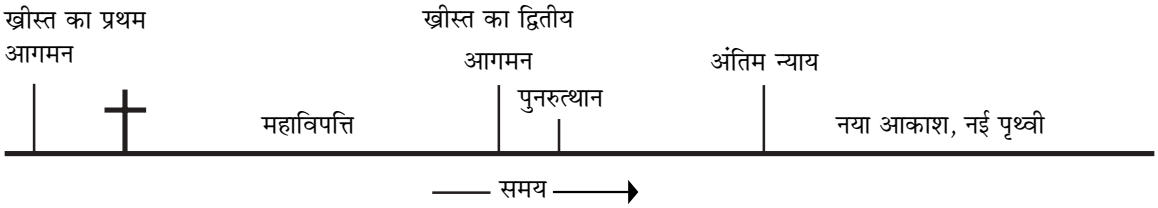

2. अपने सहयोगियों के साथ आगामी सप्ताह की गतिविधियों की योजना बनाएं :

ऐसे विश्वासियों से भेंट करने जाएं जो सताए जा रहे हैं या परीक्षाओं का सामना कर रहे हैं, उन्हें ये सात सान्त्वना की भविष्यवाणियां पढ़कर सुनाएं, **प्रकाशितवाक्य 2:10; 3:10; 7:14; 13:10; 14:12; 20:4; 21:7**

उन्हें समझाएं कि मसीहीयों पर समस्या व सताव अवश्य है, किन्तु यदि हम स्थिर व ख्रीस्त के विश्वासी बनें रहेंगे तो ख्रीस्त हमें प्रतिफल देगा।

यदि आप नए अगुवों का प्रशिक्षण कर रहे हैं तो उन्हें प्रकाशितवाक्य पुस्तक की व्याख्या करने से संबंधित निर्देशों की जानकारी दें।

- प्रतीकों का पुराने नियम के अनुसार अर्थ खोजें।
- प्रकाशितवाक्य के प्रतीकों का अर्थ वही लगाएं जैसा बाइबल के अन्य अंशों में पाया जाता है।
- इस पुस्तक में आकृतियां और प्रतीक पाए जाते हैं जो यह जानने में हमारी सहायता करते हैं कि चाहे हम प्रभु के लिए सताव ही क्यों न सह रहे हों, तो भी परमेश्वर के नियंत्रण में सब कुछ है।
- देखें, कि किस प्रकार यह पुस्तक एक मसीही जन को ख्रीस्त का आज्ञाकारी रहने और स्वर्ग की आशा में दृढ़ बने रहने के लिए अगुवाई करती है।
- इस पुस्तक की बातें मसीहीयों पर अवश्य लागू करें क्योंकि यह पुस्तक स्वयं ही ऐसा सिखाती है

3. अपने सहयोगियों के साथ आगामी आराधना की योजना बनाएं :

प्रकाशितवाक्य अध्याय 7 स्वयं पढ़ें या अन्य से पढ़वाएं।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की व्याख्या कैसे करें ? यह समझाएं। और कैसे इसे लागू करें इस पर विचार-विमर्श करें।

बच्चे प्रस्तुत करें उन बातों को, जो उन्होंने तैयार की है।

प्रभु भोज मनाने के लिए पढ़ें प्रकाशितवाक्य 1:17-18 तथा समझाएं कि यीशु की मृत्यु व पुनरुत्थान से हमें भरपूरी का जीवन व अनन्त जीवन प्राप्त होता है और प्रभु भोज में सम्मिलित होकर हम इस सत्य को स्मरण करते हैं।

छोटे समूह बनाएं जिनमें तीन या चार व्यक्ति हों, तब एक दूसरे के लिए प्रार्थना करें, विश्वासयोग्य बने रहने के लिए प्रोत्साहित करें, एक दूसरे की आवश्यकताएं सुनें।

सब याद करें प्रकाशितवाक्य 19:10

Copyright 2004 © by Paul-Timothy. May be freely copied. Download from www.Paul-Timothy.net